श्री निजात्म स्मृति

तर्ज़– सांचो तेरा राम नाम ... ...

कैसा सुंदर नाम निजात्म कैसा सुंदर नाम।। टेक।।

एस नाम पर बल– बल जाइए, नाम जपत निज आत्म पाइए।
पूर्ण हो सब काम राम, कैसा सुंदर नाम।।

हृदय शांत मुख निर्मल होवे , नाम निजात्म सब मल धोवे।
सत्गुरु का पैग़ाम राम, कैसा सुंदर नाम।।

सत्गुरु बख्शाया नाम निराला, निजात्म मेटे यम पाला।
सहज मिले निज धाम राम , कैसा सुंदर नाम।।
निज़ आत्म निजात्म जानो , पूर्ण गुरु की रम्ज़ पछानो।
निजात्म है आत्म राम, कैसा सुंदर नाम।।

सत्गुरु नाम निजात्म दीना ,विरले गुरुमुख इसको चीना।
" दासा" जप ले सुबह–ो –शाम , कैसा सुंदर नाम।।

दस्सों में स्वामी अज लाईयां काहनूं देरियां।
इक वारी दाता मेरे पा जाओ फेरियां।। टेक।।

दुखी होके इक दूजे ताईं कैहण संगता।
तेरे बिना स्वामी मेरे किवें रैहण संगता।।
बाझों तेरे दिलां ताईं कौन दे दिलेरियां , इक वारी ... ...

सोटी वाले बाबा अज तेरी बड़ी तांग है।
होर मंगा छड मैं तां मंगी ऐही मांग है।।
तेरे बिना हुण मैं तां दुःखी दर्दा घेरियां , इक वारी ... ...

अज देखो आके अपने लगे होये बाग़ नूं ।
तेरे बिना कौन मेटे दुःखां वाले दाग़ नूं।।
आवो तां गल्ला होवन मेरियां ते तेरियां , इक वारी ... ...

मैंनूं "दासनदास" कहके जदों वी बुलान्दे सी।
मेरे चन्नां अपने चरणां विच बिठांदे सी।।
हुण काहनूं आ गईयां राता ए अन्धेरियां , इक वारी ... ...

तर्ज़– शाम मुरारी कित्थे गयों दिल लैके ... ...

मेरे स्वामी जी दे दर्शन इक वारी।
अन्तरयामी जी मैं सदक़े मैं वारी।। टेक।।

बीतियां आवन याद बहारां, कमलेयां वांगूं झातियां मारां।
लागी प्रेम बीमारी, मेरे स्वामी जी ... ...

दर्शन कारण तरसन अखियां, चिर तों आस उम्मीदा रखियां।
तरसे संगत सारी, मेरे स्वामी जी ... ...

कद आवे दिन करमां वाला, जद देखां मुख भोला – भाला।
आवे प्रेम खुमारी, मेरे स्वामी जी ... ...

" दास " कहे मैं बंदा तेरा, मेहर करो हुन पावो फेरा।
आके सुन लै जारी, मेरे स्वामी जी ... ...

तर्ज़– जाओ– जाओ ऐ मेरे साधो ... ...

बसियो– बसियो ऐ सत्गुरु स्वामी मन मन्दिर में आन।। टेक।।

मन मन्दिर में आन बसो, प्रभु सुनो बेनती मोरी।
दीनानाथ दीन की अरज़ी, बख्शो अपना ध्यान ,बसियो ... ...

नाशवान संसार की मूरत, अमर मूर्ति तोरी।
जो जन तुमरा ध्यान धरत हैं, काल करे न हान , बसियो ... ...

जहां देखूं तहां तेरा वासा, और नज़र न आवे।
नाम रूप का झगड़ा मेटो, बख्शो पद निर्वाण , बसियो ... ...

तुमरे 'सार शब्द ' में दाता, सदा रहूं आनन्द।
" दासनदास " कहाऊं तोरा, रहूं सदा निरमान, बसियो... ...

तर्ज़—मैं तेरी हो चुकियां ... ...

मेरा ओ बैठा चित्तचोर, उसनूं कौन फड़े।
ओ चन्द ते मैं हां चकोर, उस नाल कौन लड़े।। टेक।।

नींद न आवे चैन न आवे, बंसी दी जद तान सुनावे।
ओ डाडा लावे खोर, उस नाल कौन लड़े।।

मार – मार कर प्रेम दा ताना, कीता उसने मैंनूं दीवाना।
टुटे कदे न डोर, उस नाल कौन लड़े।।

अपने नूं बड़ा चोर अखावे, पंजा चोरा नूं मार भगावे।
हृदय दा बड़ा कठोर, उस नाल कौन लड़े।।

" दासनदास " दी एहो अर्ज़ी, अगे शामां तेरी मर्ज़ी।
जावीं न मुखड़ा मोड़, उस नाल कौन लड़े।।

तर्ज़– दिल लेके चले ... ...

मैं जो पूछूँ भला वोह बताओगे स्वामी जी।
हां स्वामी जी, मैं जो पूछूँ भला बताओगे।। टेक।।

चुपके से बैठे हो मुखड़ा तो खोलो, मैं जो बुलाता हूं तुम भी तो बोलो
कब तक वोह सेवा बताओगे , स्वामी जी... ...

याद करो अपने प्यार की बातें, छोड़ा मुझे जब कि काली थी रातें ।।
चाँद सा मुखड़ा दिखाओगे ,स्वामी जी... ...

कब तक मिलोगे मैं आशा बनाऊं, बैठोगे आकर मैं आसन बिछाऊं।
कोमल चरण धुलवाओगे , स्वामी जी... ...

वोह भी वक्त था अकेले न रहना, साथ ही चलो यह था आपका कहना।।
कब तक मुझे अब बुलाओगे,स्वामी जी... ...

बाईस वर्ष का मेरा प्यार छोड़ा, हो करके दयालु है मुखड़ा क्यों मोड़ा।
ऐसे ही हठ को निभाओगे, स्वामी जी... ...

दो बातें करनी थीं मुझको बुलाया, दो बातें सुनने को था " दास " आया।।
कब तक वोह बात सुनाओगे, स्वामी जी... ...

तर्ज़– चुप– चुप खड़े हो ... ...

चुपचाप तेरी दाता कद तक रहेगी।
जिंदड़ी निमाणी दुःख कद तक सहेगी।। टेक।।

होय के दयालु पिता दया नहीं धारदे।
मेरे दुःखा वल स्वामी झाती मारदे।।
मेरी फ़रियाद हुन तां सुननी ही पएगी , जिंदड़ी ... ...

दुनियां दे साक सैन सारे चा छुड़ाए जे।
दिल मेरे ताईं फन्द प्रेम वाले पाए जे ।।
जे न सुनी कूक मेरी दुनिया की कहेगी , जिंदड़ी ... ...

गल्ला मैंनूं याद सबो आ गईया पुरानियां।
छड मैंनू रोलना ते कर मेहरबानियां।।
दया दे भण्डार विच कमी तां नहीं नहीं पएगी, जिंदड़ी ... ...

कहिंदा '' दासनदास'' न उदास मैंनू करना।
अडके मैं झोली खड़ा झोली मेरी भरना।।
अखां विचों नदी तां प्रेम वाली बहेगी , जिंदड़ी ... ...